शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2013

भक्ति परम्परा का समाज निर्माण में योगदान

(रामचरितमानस के विशेष सन्दर्भ में)

मोहिनी गुप्ता
शोधार्थी
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग
वनस्थली विद्यापीठ (.राज)

शोध संक्षेप

भारतीय साहित्य के मध्यकाल को साहित्य की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा जाता है। इस युग में पूरे देश में उठे भक्ति के ज्वार ने अपने में सभी को समाहित कर लिया। इसी युग में गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस जैसे ग्रंथ की रचना की, जिसने सभी विचारधाराओं में समन्वय करने का अद्भुत कार्य किया। प्रस्तुत शोध पत्र में भक्ति की उत्पत्ति के साथ श्री रामचरितमानस के योगदान को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

साक्ष्यों से विदित होता है कि भक्ति की उत्पत्ति द्रविड़ देश में हुई। इस सन्दर्भ में श्रीमद्भागवत में यह कहा गया है-

"उत्पन्ना द्रविड़े साहं बुद्धि कर्णाटके गता।
क्वाचित्क्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता।।" 1

अर्थात् भक्ति की उत्पत्ति द्रविड़ देष में हुई, कर्नाटक में बढ़ी तथा कहीं कहीं-महाराष्ट्र में सम्मानित होने के पष्चात् गुजरात में वृद्ध स्वरूप को प्राप्त हुई अर्थात् बूढ़ी हो गयी। उपर्युक्त तथ्यों का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि भक्ति चिरकाल तक रहने के पष्चात् बूढ़ी हुई है। इस संदर्भ में श्रीमद्भागवत में यह वर्णन मिलता है-

"वृन्दावने पुनः प्राप्त नवीनैव सुरुपिणी।
जाताहं युवती सम्यक् श्रेष्ठ रूपातुसाम्प्रतम्।।" 2

भगवद्गीता में भक्ति को नवयुवती या नवीन स्वरुपिणी से सम्बोधित किया गया है। वृन्दावन में कृष्ण और राधा की भक्ति देखने को मिलती है। अति प्राचीन काल में वैष्णव धर्म का प्रचार उत्तर भारत में था पर दक्षिण भारत में उसे गति मिली 3 दक्षिण भारत में भक्ति का जो आन्दोलन उठा उसमें आलवार सन्तों की मुख्य भूमिका हैं। आलवारों का समय 5वीं से 9वीं षती है। 4 पाँचवीं षती से नौवीं शती तक दक्षिण में भक्ति बहुत तीव्र थी। आलवारों ने अपने जीवन एवं कर्म द्वारा प्रतिपादित किया कि भक्ति का मार्ग सर्वसुलभ है। इसमें ब्राह्मण और शूद्र, स्त्री और पुरुष, बालक और वृद्ध सब को निर्बाध समान अधिकार हैं। 5

दक्षिण के वैष्णव गुरुओं के दो वर्ग थेआलवार - और आचार्य। आलवार निर्मल अनुराग भाव तथा विष्णु या नारायण के प्रति भक्ति भाव में तल्लीन थे। आलवारों की भक्ति उस पावन सलिला की नैसर्गिक धारा के समान है। जो स्वयं उद्वेलित होकर प्रखर गति से बहती हुई जाती है। और जो कुछ सामने आता है उसे तुरन्त बहाकर अलग फेंक देती है। आचार्यों का उद्धेश्य वादविवाद -

करना एवं अपने मतों तथा सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा करना था। रामानुज ने उत्तर की ओर बद्रीनाथ, केदारनाथ की यात्रा की। जिससे भक्ति एवं भक्तों के क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ एवं राष्ट्रीयता की भावना जागी। रामानुज के पश्चात रामानंद ने उत्तर भारत में भक्ति परम्परा को बढ़ाया। रामानुज ने रामप्रसार किया। -भक्ति का प्रचार- रामानुज के पष्चात् राम भक्ति को कबीरदास ने आगे बढ़ाया। कबीरदास रामानन्द के शिष्य थे। कबीरदास ने राम से आश्रय कोई और नहीं दशरथ के सुत राम नहीं अपितु विराट् परमात्मा को माना है। कबीरदास वैष्णव भक्ति को राम के तुल्य हीमानते है। वैष्णव भक्ति मोक्ष को प्रदान करने वाली है।

"मेरे संगी दोइ जना, एक वैस्नो एक राम।
वो है दाता मुकुति का, वो सुमिरावै राम।।"

रामचरितमानस का समाज निर्माण में योगदान - कबीरदास के उपरान्त तुलसीदास ने उत्तर भारत में राम भक्ति का प्रचार किया। तुलसीदास ने राम भक्ति पर रामचरितमानस महाकाव्य को प्रस्तुत किया। तुलसीदास वर्णन करते हैं किपरमात्मा - और परम पद श्री राम ही है। कोई दूसरा नहीं6 सबका मंगल करने वाले राम स्वयं समस्त कामनाओं से मुक्त है। तुलसीदास कहते है कि अगर राम के प्रति प्रेम न हो तो सब ज्ञान चुल्हे में झोक दिया जाता है, तथा यम ज्ञान को ले जाता है और निगल जाता है। प्रत्येक वस्तु जलकर खाक हो जाती है और मूल ही नष्ट हो जाता है। 7 राम की भक्ति से मनुष्य को आनन्द की प्राप्ति होती है तथा इसके बिना आनन्द चला जाता हैं। अतएव उनकी उपासना करनी चाहिए। जहाँ श्री राम है, वहाँ पाप नहीं है। और इसलिए मन की षुद्धि के लिए ध्यान और चिंतन करना चाहिए। वे समर्थ ही नहीं त्याज्य है। 8 भक्ति परम्परा से समाज को मानवता, भाईचारा, सत्यता, धर्मानुसार, कार्य, करुणा, दया, कृपालुता, राम नाम की महिमा इत्यादि हमें प्राप्त होती है। तुलसीदास कहते हैंसंसार में जीव जहाँ भी - उत्पन्न होता है। वही तीनों तापों से जलता रहता है। किसी का दोष नहीं है, अपने कर्मों का फल है, इसी से उसे स्वप्न में भी लेषमात्र सुख नहीं मिलता। मनुष्य राम नाम के स्मरण से अपने तीनों तापों से मुक्ति प्राप्त करता है। गोसाई जी कहते है कि जिसकों 'राम' इन दो अक्षरों में प्रीति और अप्रीति है, उसका भला ही है 9 राम नाम अजामिल जैसे खलों को भी तारनें वाला है, गज और वेष्या का भी निस्तार करने वाला है। जिसके हृदय में 'रा' और 'म' इन दो अक्षरों का बल होता है, उसकी रक्षा श्री राम करेगें। श्री राम बढ़े कृपालु थे। जिनकी कृपा से षबरी को प्राप्त हुई। हनुमान जी अपने को श्री राम का सेवक कहते हैं। सेवक की भाँति श्री राम की सेवा करते है। हनुमान जी की भक्ति दास्य भाव की है। रामचरितमानस में हमें वर्णन मिलता है- राम दूत मै मातु जानकी। सत्य सपथ करूना निधान की।।"10

श्री राम में दयालुता की भावना है जैसेऋषियों - की दया पर, अहिल्या पर शबरी पर, जटायु, सुग्रीव की दीन दशा पर। केवट को भी राम जी की सेवा का अवसर प्राप्त होता है 11

"पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहो।
मोहि राम राउरि आन दशरथ सपथ सब साची कहो।।"12

उपर्युक्त तथ्यों के अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भक्ति परम्परा से समाज को मानवता, भाईचारा, सत्यता, धर्मानुसार, कार्य, करुणा, दया, कृपालुता, राम नाम की महिमा इत्यादि हमें प्राप्त होती है।

श्री राम भक्ति से समाज को नई दिशा प्राप्त होती है। जिसका अनुसरण वर्तमान समय कर रहा है। जिससे सम्पूर्ण समाज भक्ति मय दिखाई देता है। श्री राम हमारे समाज के आदर्श है। प्राचीन काल से लेकर आज तक हमें श्री राम की उपासना दिखाई पड़ती है।

सन्दर्भ

1 श्री मद्भागवत, प्रथम खण्ड, अध्याय 1/48
2 श्री मद्भागवत, प्रथम खण्ड, अध्याय 1/50
3 भक्ति काव्य की भूमिका, प्रेम शंकर, पृ .सं.92, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4 तमिल वैष्णव कवि आलवार, डाॅरविन्द्र कुमार . सेठ।
5 तमिल वैष्णव कवि आलवार, पृ .सं.26 डारविन्द्र . कुमार सेठ।
6 वैष्णव शैव तथा अन्य धार्मिक मत, आर .जी . भण्डारकर
7 वैष्णव शैव तथा अन्य धार्मिक मत, आर .जी . भण्डारकर
8 वैष्णव शैव तथा अन्य धार्मिक मत, आर .जी . भण्डारकर
9 वैष्णव शैव तथा अन्य धार्मिक मत, आर .जी . भण्डारकर
10 रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, सोरठा12, चै.5
11 रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड,छन्द 1, दो .13
12 रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, अयोध्याकाण्ड